पाँच महोर्रम

पाचवीं माहे महोंरम की हुई जब मोमीनीं
कर्बला में फ़ौज लेकर आ गया शिमरे लईं

क्या सितमगर थे के निज़दे खेमऐ एहले हरम
घोड़े दौड़ाते हुए आते थे पैहम अहले कीन

चह चमक नैज़ों की और झनकार तलवारों की आह
सुनके बच्चे खौफ़ से गिरते थे बालाऐ ज़मीं

शह से जब जैनब ने पूछा यह के अब आया है कौन
सर झुका कर आप बोले है यही शिमरे लईं

जैसे ही नामे लईं शह की ज़बा पर आ गया
हज़रते ज़ैनब हुईं हद से सिवा अनदोहगीं

शह ने फरमाया बहन क्यों इस क़दर है इज़तिराब
यास से कहने लगीं यूँ बिन्ते ख़तमुल मुरसलीन

खुद सुना है मैंने नाना को यह फरमाते हुए
कातिले शब्बीर होगा एक दिन शिमरे लईं

आप ही फरमाईए फिर क्योंं न हूँ मैं बे हवास
पंजेतन में बस फ़क़त है आप ही या शाहेदीन

सुन के यह शह ने कहा सब्रों रज़ा से काम लो
मसलहत है हक़ की, क्यों हो इस क़दर अन्दोहगीं

या रसूल इब्ने अली सदका रसूलिल्लाह का
कर्बला में 'फिक्र' की हो कब्र रौज़े के क़रीं